وَمَن يَرۡغَبُ عَن مِّلَّةِ إِبۡرَٰهِـۧمَ إِلَّا مَن سَفِهَ نَفۡسَهُۥۚ وَلَقَدِ
ٱصۡطَفَيۡنَٰهُ فِي ٱلدُّنۡيَاۖ وَإِنَّهُۥ فِي ٱلۡأٓخِرَةِ لَمِنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ١٣٠ إِذۡ
قَالَ لَهُۥ رَبُّهُۥٓ أَسۡلِمۡۖ قَالَ أَسۡلَمۡتُ لِرَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ ١٣١ وَوَصَّىٰ
بِهَآ إِبۡرَٰهِـۧمُ بَنِيهِ وَيَعۡقُوبُ يَٰبَنِيَّ إِنَّ ٱللَّهَ ٱصۡطَفَىٰ لَكُمُ
ٱلدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُم مُّسۡلِمُونَ ١٣٢ أَمۡ كُنتُمۡ شُهَدَآءَ
إِذۡ حَضَرَ يَعۡقُوبَ ٱلۡمَوۡتُ إِذۡ قَالَ لِبَنِيهِ مَا تَعۡبُدُونَ مِنۢ
بَعۡدِيۖ قَالُواْ نَعۡبُدُ إِلَٰهَكَ وَإِلَٰهَ ءَابَآئِكَ إِبۡرَٰهِـۧمَ وَإِسۡمَٰعِيلَ
وَإِسۡحَٰقَ إِلَٰهٗا وَٰحِدٗا وَنَحۡنُ لَهُۥ مُسۡلِمُونَ ١٣٣ تِلۡكَ أُمَّةٞ قَدۡ
خَلَتۡۖ لَهَا مَا كَسَبَتۡ وَلَكُم مَّا كَسَبۡتُمۡۖ وَلَا تُسۡـَٔلُونَ عَمَّا
كَانُواْ يَعۡمَلُونَ ١٣٤ وَقَالُواْ كُونُواْ هُودًا أَوۡ نَصَٰرَىٰ تَهۡتَدُواْۗ قُلۡ
بَلۡ مِلَّةَ إِبۡرَٰهِـۧمَ حَنِيفٗاۖ وَمَا كَانَ مِنَ ٱلۡمُشۡرِكِينَ ١٣٥ قُولُوٓاْ
ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيۡنَا وَمَآ أُنزِلَ إِلَىٰٓ إِبۡرَٰهِـۧمَ وَإِسۡمَٰعِيلَ
وَإِسۡحَٰقَ وَيَعۡقُوبَ وَٱلۡأَسۡبَاطِ وَمَآ أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَمَآ
أُوتِيَ ٱلنَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمۡ لَا نُفَرِّقُ بَيۡنَ أَحَدٖ مِّنۡهُمۡ وَنَحۡنُ لَهُۥ
مُسۡلِمُونَ ١٣٦ فَإِنۡ ءَامَنُواْ بِمِثۡلِ مَآ ءَامَنتُم بِهِۦ فَقَدِ ٱهۡتَدَواْۖ
وَّإِن تَوَلَّوۡاْ فَإِنَّمَا هُمۡ فِي شِقَاقٖۖ فَسَيَكۡفِيكَهُمُ ٱللَّهُۚ وَهُوَ
ٱلسَّمِيعُ ٱلۡعَلِيمُ ١٣٧ صِبۡغَةَ ٱللَّهِ وَمَنۡ أَحۡسَنُ مِنَ ٱللَّهِ صِبۡغَةٗۖ
وَنَحۡنُ لَهُۥ عَٰبِدُونَ ١٣٨ قُلۡ أَتُحَآجُّونَنَا فِي ٱللَّهِ وَهُوَ رَبُّنَا
وَرَبُّكُمۡ وَلَنَآ أَعۡمَٰلُنَا وَلَكُمۡ أَعۡمَٰلُكُمۡ وَنَحۡنُ لَهُۥ

مُخۡلِصُونَ ١٣٩ أَمۡ تَقُولُونَ إِنَّ إِبۡرَٰهِـۧمَ وَإِسۡمَٰعِيلَ وَإِسۡحَٰقَ
وَيَعۡقُوبَ وَٱلۡأَسۡبَاطَ كَانُواْ هُودًا أَوۡ نَصَٰرَىٰۗ قُلۡ ءَأَنتُمۡ أَعۡلَمُ
أَمِ ٱللَّهُۗ وَمَنۡ أَظۡلَمُ مِمَّن كَتَمَ شَهَٰدَةً عِندَهُۥ مِنَ ٱللَّهِۗ وَمَا
ٱللَّهُ بِغَٰفِلٍ عَمَّا تَعۡمَلُونَ ١٤٠ تِلۡكَ أُمَّةٞ قَدۡ خَلَتۡۖ لَهَا مَا
كَسَبَتۡ وَلَكُم مَّا كَسَبۡتُمۡۖ وَلَا تُسۡـَٔلُونَ عَمَّا كَانُواْ
يَعۡمَلُونَ ١٤١

Theme

Islam: the religion of Ibrahim. Ibrahim's advice to his sons. The order of Allah to believe in all the Prophets without discrimination. Baptism is from Allah. Ibrahim and his sons were neither Jews nor Christians.	इस्लाम: दीन-ए-इब्राहीम। इब्राहीम की अपनी औलाद को वसीयत। तमाम अंबिया पर बिना किसी भेदभाव के ईमान लाने का अल्लाह का हुक्म। असल रंग (सिब्ग़ा) अल्लाह ही की तरफ़ से है। इब्राहीम और उनकी औलाद न यहूदी थे न ईसाई।

Tarjumani

Who but a foolish man would renounce the faith of Ibraheem? We chose him in this worldly life, and in the Hereafter, he will be among the righteous. When his Rabb asked him: "Be a Muslim," he answered: "I have become a Muslim to the Rabb of the worlds," This was the legacy	अब कौन है जो इबराहीम के तरीक़े से नफ़रत करे? जिसने ख़ुद अपने आपको हिमाक़त और जिहालत में मुब्तला कर लिया हो उसके सिवा कौन यह हरकत कर सकता है? इबराहीम तो वह शख़्स है जिसको हमने दुनिया में अपने काम के लिए चुन लिया था और आख़िरत में उसका शुमार साहिलिन में होगा। उसका हाल

that Ibraheem left to his sons and so did Yaqoob (Jacob), when he said: "O my sons! Allah has chosen for you this Deen (way of life), therefore, die not unless you are Muslims." Were you present when death approached Ya'qoob (Jacob)? He asked his sons: "Who will you worship after me?" They replied: "We will worship the same One God Who is your Rabb and the Rabb of your forefathers Ibraheem, Isma'il and Ishaq (Isaac), and to Him we all submit as Muslims. Jews They were a people that have passed away. They shall reap the fruits of what they did, and you shall for what you do. You shall not be questioned about what they did. and Christians say: "Be Jews or Christians, you shall then be rightly guided." O Muhammad, say: "By no means! We follow the faith of Ibraheem, the upright one; and he was not one of the mushrikeen (those who worship others beside Allah). Say: "We believe in Allah and

यह था कि जब उसके रब ने उससे कहा, "मुस्लिम हो जा" तो उसने फ़ौरन कहा, मैं मालिके-कायनात का 'मुस्लिम' हो गया |" इसी तरीक़े पर चलने की हिदायत उसने अपनी औलाद को की थी और इसी की वसीयत याक़ूब अपनी औलाद को कर गया था | उसने कहा था कि "मेरे बच्चो, अल्लाह ने तुम्हारे लिए यही दीन पसन्द किया है | लिहाज़ा मरते दम तक मुस्लिम ही रहना |" फिर क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे जब याक़ूब इस दुनिया से रुखसत हो रहा था? उसने मरते वक़्त अपने बेटों से पूछा, "बच्चो, मेरे बाद तुम किसकी बन्दगी करोगे?" उन सबने ज़वाब दिया, "हम उसी एक ख़ुदा की बन्दगी करेंगे, जिसे आपने और आपके बुजुर्गों इबराहीम, इसमाईल और इसहाक ने ख़ुदा माना है, और हम उसी के मुस्लिम हैं |" वे कुछ लोग थे जो गुज़र गए, जो कुछ उन्होंने कमाया, वह उनके लिए है और जो कुछ तुम कमाओगे, वह तुम्हारे लिए है | तुमसे यह न पूछा जाएगा कि वे क्या करते थे? यहूदी कहते हैं, "यहूदी हो तो राहे-रास्त पाओगे |" ईसाई कहते हैं, "ईसाई हो तो हिदायत मिलेगी |" उनसे कहो, "नहीं, बल्कि सबको छोड़कर इबराहीम का तरीका

that which is revealed to us; and what was revealed to Ibraheem (Abraham), Isma'il (Ishmael), Ishaq (Isaac), Yaqoob (Jacob) and their descendants, and that which was given to Musa (Moses). Isa (Jesus) and other Prophets from their Rabb. We do not discriminate between any of them, and to Him (Allah) we have surrendered our-selves (in Islam), " So, if they believe (accept Islam) like you have believed, they shall be rightly guided; if they reject it, they will surely fall into dissension (divide into differing factions); Allah will be your sufficient defender against them, and He hears and knows everything. Baptism is the baptism of Allah; and who is better than Allah in baptizing? Him do we worship. Say, O Muhammad: "Would you dispute with us concerning Allah, who is our Rabb and your Rabb as well? We shall be accountable to Him for our deeds and you for yours; to Him Alone we are devoted. Do you claim that Ibraheem (Abraham),

| और इबराहीम मुशरिकों में से न था |" मुसलमानो! कहो कि "हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस हिदायत पर जो हमारी तरफ़ नाज़िल हुई है और जो इबराहीम, इसमाईल, इसहाक, याकूब और औलादे-याकूब की तरफ़ नाज़िल हुई थी और जो मूसा और ईसा और दूसरे तमाम पैगम्बरों को उनके रब की तरफ़ से दी गई थी | हम उनके दरमियान कोई तफरीक नहीं करते और हम अल्लाह के मुस्लिम हैं |" फिर अगर वे उसी तरह ईमान लाएँ, जिस तरह तुम ईमान लाए हो, तो हिदायत पर हैं, और अगर उससे मुहँ फेरें तो खुली बात है कि वे हठधर्मी में पड़ गए हैं | लिहाज़ा इत्मीनान रखो कि उनके मुक़ाबले में अल्लाह तुम्हारी हिमायत के लिए काफ़ी है | वह सब कुछ सुनता और जानता है | कहो, "अल्लाह का रंग इखतियार करो | उसके रंग से अच्छा और किसका रंग होगा? और हम उसी की बन्दगी करनेवाले लोग हैं |" ऐ नबी, इनसे कहो, "क्या तुम अल्लाह के बारे में हमसे झगड़ते हो? हालाँकि वही हमारा रब भी है और तुम्हारा रब भी | हमारे आमाल हमारे लिए हैं, तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिए, और हम अल्लाह ही के लिए अपनी बन्दगी को खालिस कर चुके हैं | या फिर तुम्हारा कहना

Isma'il (Ishmael), Ishaq (Isaac), Yaqoob (Jacob) and their descendants were all Jews or Christians? Say: Are you more knowledgeable than Allah?" Who is more unjust than the one who hides the testimony received from Allah? Allah is not unaware of what you do. That was a nation which has already passed away. They are responsible for what they did and you are responsible for what you do, you shall not be questioned about their deeds.	यह है कि इबराहीम, इसमाईल, इसहाक, याकूब और औलादे-याकूब सब के सब यहूदी थे या नसरानी थे?" कहो, "तुम ज़्यादा जानते हो या अल्लाह? उस शख्स से बड़ा ज़ालिम और कौन होगा, जिसके ज़िस्म अल्लाह की तरफ़ से एक गवाही हो और वह उसे छिपाए? तुम्हारी हरकत से अल्लाह गाफ़िल तो नहीं है— वे कुछ लोग थे जो गुज़र चुके | उनकी कमाई उनके लिए थी और तुम्हारी कमाई तुम्हारे लिए | तुमसे उनके आमाल के मुताल्लिक सवाल नहीं होगा |"

Tafsir

Who would deliberately renounce the religion of Ibrāhīm except someone who reveals himself to be a fool? We chose him in this world and in the Next World he will be one of the people of right action. [2:130]	**दीन-ए-इब्राहीम से कौन मुँह मोड़ेगा सिवाय उस व्यक्ति के, जो स्वयं को नादान सिद्ध करता है? हमने इब्राहीम को इस दुनिया में भी चुन लिया, और आख़िरत में भी वह नेककारों में से होंगे। [2:130]**
Who would deliberately renounce the religion of Ibrāhīm except someone who reveals himself to be a fool?	**दीन-ए-इब्राहीम को जानबूझकर कौन छोड़ेगा, सिवाय उस व्यक्ति के जो स्वयं को मूर्ख सिद्ध करता है?**

This question is in fact a rebuke and a negative answer to it is implied, such as: ‘No one would.’ It is also an expression which tends to distance the reader from doing such a thing. Millah means religion and law. The ‘someone who reveals himself to be a fool’ is said by Qatādah to be the Jews and Christians who renounced the religion of Ibrāhīm and adopted Judaism and Christianity, which were innovations that did not come from Allah. Az-Zajjāj said that *safiha* (to be a fool) means ‘to be ignorant of a matter because of not thinking about it’. Abū ‘Ubaydah says that it means ‘destroys himself’. Ibn Bahr says, ‘It means that it refers to someone having no self-knowledge and no grasp of the evidence and proofs within himself, which indicate that he has an incomparable Creator, thus failing to recognize Allah’s unity and power.’

यह प्रश्न वास्तव में ताड़ना (फटकार) के रूप में है और इसका नकारात्मक उत्तर स्वयं इसमें निहित है, अर्थात्: “कोई भी नहीं।” इस शैली का उद्देश्य पाठक को ऐसे कार्य से दूर रखना भी है। मिल्लत से आशय दीन और शरीअत है। “जो स्वयं को नादान सिद्ध करता है” के विषय में क़तादाؒ कहते हैं कि इससे यहूद और नसारा अभिप्रेत हैं, जिन्होंने दीन-ए-इब्राहीमؑ को छोड़ दिया और यहूदियत व नसरानियत को अपनाया—जो ऐसी नवाचार (बिदअतें) थीं जो अल्लाह की ओर से नाज़िल नहीं हुईं। अज़-ज़ज्जाजؒ कहते हैं कि सफ़िहा (नादान होना) का अर्थ है किसी विषय पर विचार-विमर्श न करने के कारण उससे अनभिज्ञ रहना। अबू ‘उबैदहؒ के अनुसार इसका अर्थ है: “वह स्वयं को विनष्ट कर लेता है।” इब्न बह्रؒ कहते हैं: “इससे वह व्यक्ति अभिप्रेत है जिसे अपनी आत्म-पहचान नहीं होती और अपने भीतर विद्यमान प्रमाणों व दलीलों का बोध नहीं होता, जो इस बात की ओर संकेत करते हैं कि उसका एक अतुलनीय सृष्टिकर्ता है; परिणामतः वह अल्लाह की एकता

	और सामर्थ्य को पहचानने में असफल रहता है।”
Az-Zajjāj said, ‘He reflects about his hands with which he strikes, his feet with which he walks, his eyes with which he sees, his ears with which he hears, his tongue with which he speaks, his molars which grow when he has no need to suckle and needs to masticate the food he eats, his stomach which processes his nourishment, his liver which detoxifies, his veins and passageways which reach the limbs, his intestines where the dregs of food settle and then emerge from the bottom of his body. He uses this as evidence that He has an All-Powerful, All-Knowing Wise Creator. This is the meaning of His words: “in yourselves as well. Do you not see?” (51:21)’ Al-Khaṭṭābī indicated this.	अज़-ज़ज्जाजؒ कहते हैं: “मनुष्य अपने हाथों पर विचार करता है जिनसे वह प्रहार करता है, अपने पैरों पर जिनसे वह चलता है, अपनी आँखों पर जिनसे वह देखता है, अपने कानों पर जिनसे वह सुनता है, अपनी ज़बान पर जिनसे वह बोलता है, अपनी दाढ़ों पर जो उस समय उगती हैं जब उसे दूध पीने की आवश्यकता नहीं रहती बल्कि खाने को चबाने की ज़रूरत होती है, अपने पेट पर जो उसके भोजन को पचाता है, अपने जिगर पर जो विषैले पदार्थों को साफ़ करता है, अपनी नसों और नलिकाओं पर जो अंगों तक पहुँचती हैं, और अपनी आँतों पर जहाँ भोजन का अवशेष ठहरता है और फिर शरीर के निचले भाग से बाहर निकल जाता है। वह इन सबको इस बात की दलील बनाता है कि उसका एक सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, और अत्यंत बुद्धिमान सृष्टिकर्ता है। यही अल्लाह के इस कथन का अर्थ है: ‘और तुम्हारे अपने भीतर भी (निशानियाँ हैं); क्या तुम देखते नहीं?’ (अज़-ज़ारियात: 21)।” इसी ओर ख़त्ताबीؒ ने भी संकेत किया है।

This āyah is used as evidence by those who say that the Sharīʿah of Ibrāhīm is the same as our Sharīʿah except for those aspects of it which have been abrogated as He says: *'the religion of your forefather Ibrāhīm'* (22:78) and *'Follow the religion of Ibrāhīm'* (16:123).	इस आयत को उन लोगों ने प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया है जो कहते हैं कि शरीअत-ए-इब्राहीमؑ हमारी शरीअत के समान ही है, सिवाय उन बातों के जिन्हें निरस्त (मंसूख़) कर दिया गया है। जैसा कि अल्लाह तआला का फ़रमान है: "तुम्हारे पूर्वज इब्राहीमؑ का दीन" (22:78) और "इब्राहीमؑ के दीन का अनुसरण करो" (16:123)।
We chose him in this world	**हमने उसे इस दुनिया में चुन लिया।**
This means: 'We chose him to bear Our Message and purified him.' The word *istafā* (chose) is derived from *ṣafwah* which means to be pure and to choose the best.	इसका अर्थ यह है: "हमने उसे अपना संदेश वहन करने के लिए चुना और उसे पवित्र व शुद्ध कर दिया।" शब्द इस्तफ़ा (चुना) सफ़्वह से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है पवित्रता और श्रेष्ठ को चुनना।
and in Next World he will be one of the people of right action	**और आख़िरत में वह नेककारों में से होगा।**
The 'people of right action' in the Next World are those who are successful and will enter the Garden. Arabic scholars say three things about the phrasing in this āyah. One is: 'He will be righteous in the Next World'. The second is that 'in the Next World' is connected to	आख़िरत में "नेककार" से अभिप्राय उन लोगों से है जो सफल होंगे और जिन्हें जन्नत में प्रवेश दिया जाएगा। अरब विद्वानों ने इस आयत की अभिव्यक्ति (उस्लूब) के बारे में तीन बातें कही हैं। एक यह कि: "वह आख़िरत में नेक होगा।" दूसरी यह कि "आख़िरत में" किसी महज़ूफ़

something elided, i.e. 'his righteousness is in the Next World.' The third is that *ṣāliḥīn* does not mean 'those who do right action' here but is simply a designation like 'man'. There is also a fourth view which states that it means: 'He is one of the righteous in respect of the actions of the Next World.' Al-Ḥusayn ibn al-Faḍl said, 'There is a change in the normal order of words. It implies: "We chose in this world and in the Next World, and he is one of the people of right action."' Ḥajjāj ibn Ḥajjāj (who is Ḥajjāj al-Aswad and Ḥajjāj al-Aḥwal, known as Ziq 'l-ʿAsal) said that he heard Muʿāwiyah ibn Qurrah say, 'O Allah, You made the righteous righteous and provided them with actions in obedience to You so that You are pleased with them. O Allah, as You made them righteous, make us righteous. As You provided them with actions in obedience to You, provide us

(लुप्त) कथन से जुड़ा है, अर्थात्: "उसकी नेक़ी आख़िरत में होगी।" तीसरी यह कि यहाँ सालिहीन से तात्पर्य "नेक अमल करने वाले" नहीं, बल्कि केवल एक विशेषणात्मक नाम (लक़ब) है, जैसे "आदमी" कहा जाता है। एक चौथा मत भी है, जिसके अनुसार इसका अर्थ यह है: "वह आख़िरत के अमलों के दृष्टिकोण से सालिहीन में से है।" हुसैन बिन अल-फ़ज़्लؒ ने कहा: "यहाँ शब्दों के सामान्य क्रम में उलट-फेर (तक़दीम व ताख़ीर) है। इसका आशय यह बनता है: 'हमने उसे दुनिया में भी और आख़िरत में भी चुन लिया, और वह नेककारों में से है।'" हज्जाज बिन हज्जाज (जो हज्जाज अल-असवद और हज्जाज अल-अहवल हैं, और ज़ीक़ुल-'असल के नाम से प्रसिद्ध हैं) कहते हैं कि उन्होंने मुआविया बिन क़ुर्रहؒ को यह कहते हुए सुना: "ऐ अल्लाह! तूने नेक लोगों को नेक बनाया और उन्हें अपनी आज्ञापालन के अमल प्रदान किए, ताकि तू उनसे प्रसन्न हो जाए। ऐ अल्लाह! जिस प्रकार तूने उन्हें नेक बनाया, हमें भी नेक बना दे। और जिस प्रकार तूने उन्हें अपनी आज्ञापालन के अमल प्रदान किए, हमें भी अपनी

with actions in obedience to You. Be pleased with us!’	आज्ञापालन के अमल प्रदान कर। और हमसे प्रसन्न हो जा!”
When his Lord said to him, ‘Become a Muslim!’ he said, ‘I am a Muslim who has submitted to the Lord of all the worlds.’ [2:131]	**जब उसके रब ने उससे कहा: “आज्ञाकारी (मुस्लिम) बन जाओ”, तो उसने कहा: “मैं रब्बुल-आलमीन का आज्ञाकारी (मुस्लिम) हो चुका हूँ।” [2:131]**
This āyah is connected to the previous one and the implication is, ‘We chose him when his Lord said to him, “Become a Muslim and submit.”’ Allah said this to Ibrāhīm after He had tested him with the stars, the moon and the sun (cf. 6:76-84). Ibn Kaysān and al-Kalbī said it means: ‘Make your dīn sincere for Allah through tawḥīd.’ It is said that it means: ‘Be humble and submitted.’ Ibn ʿAbbās said, ‘Allah said that to him when he abandoned the customs of his people.’ Islam here entails all its various aspects. In Arabic the word ‘Islam’ implies submission and obedience to the one submitted to. Not everyone’s Islam entails faith	यह आयत पिछली आयत से जुड़ी हुई है और इसका आशय यह है: “हमने उसे उसी समय चुन लिया जब उसके रब ने उससे कहा: ‘मुस्लिम बन जाओ और पूर्ण रूप से आज्ञाकारी हो जाओ।’” अल्लाह तआला ने यह बात इब्राहीम से उस समय कही जब उसने उन्हें सितारों, चाँद और सूरज के माध्यम से परखा था (देखिए: 6:76–84)। इब्न कैसान और कलबी ने कहा है कि इसका अर्थ यह है: “तौहीद के माध्यम से अपने दीन को अल्लाह के लिए ख़ालिस कर दो।” यह भी कहा गया है कि इसका आशय है: “नम्रता अपनाओ और पूरी तरह अधीन हो जाओ।” इब्न अब्बास कहते हैं कि अल्लाह तआला ने यह आदेश उस समय दिया जब इब्राहीम ने अपनी क़ौम की रस्मों और रिवाजों को त्याग दिया था। यहाँ इस्लाम अपने सभी पहलुओं सहित अभिप्रेत है।

but everyone's faith entails Islam because whoever believes in Allah necessarily submits to and obeys Allah. Not everyone who submits to Allah believes in Him because his submission may be out of fear of the sword and that is not faith. The Qadariyyah and Kharijites hold a contrary view saying that Islam is synonymous with faith and that every Muslim is a believer and every believer a Muslim based on Allah's words: 'The dīn in the sight of Allah is Islam' (3:19). This indicates that Islam is the dīn and that whoever is not a Muslim is not a believer. Our evidence is found in His words: 'The desert Arabs say, "We believe." Say: "You do not believe. Say rather: 'We have become Muslim.'..." (49:14) Allah reported that not every one who becomes Muslim is a believer and so it indicates that not every Muslim is a believer. When Saʿd ibn Abi Waqqāṣ said, 'Give to so-and-so. He is a believer,' the Prophet ﷺ said to

अरबी भाषा में इस्लाम का अर्थ है: जिसके सामने समर्पण किया जाए, उसकी आज्ञा और पालन करना। हर व्यक्ति का इस्लाम अनिवार्य रूप से ईमान को सम्मिलित नहीं करता, लेकिन हर मोमिन का ईमान अवश्य इस्लाम को सम्मिलित करता है, क्योंकि जो अल्लाह पर ईमान लाता है, वह अनिवार्य रूप से अल्लाह के सामने झुकता है और उसकी आज्ञा का पालन करता है। लेकिन हर वह व्यक्ति जो अल्लाह के सामने झुक जाए, आवश्यक नहीं कि वह मोमिन ही हो, क्योंकि उसका समर्पण तलवार के भय से भी हो सकता है, और यह ईमान नहीं है। क़दरीया और ख़वारिज़ इसके विपरीत मत रखते हैं। उनका कहना है कि इस्लाम और ईमान समानार्थी हैं, और हर मुसलमान मोमिन है तथा हर मोमिन मुसलमान—और वे अल्लाह तआला के इस कथन से प्रमाण लेते हैं: "निश्चय ही अल्लाह के निकट दीन इस्लाम ही है" (3:19)। उनके अनुसार इसका अर्थ यह है कि इस्लाम ही दीन है, और जो मुसलमान नहीं, वह मोमिन नहीं। हमारा प्रमाण अल्लाह तआला के इस कथन में है: "बद्दू कहते हैं: 'हम ईमान लाए।' कह दो: 'तुम ईमान नहीं लाए,

him, 'Or a Muslim.' Muslim transmitted it. It indicates that faith and Islam are not the same. Faith is internal and Islam is external. This is clear. 'Faith' can be used to mean Islam and Islam can be used to mean 'faith' since they are connected. It is as if Islam were the fruit of faith and an indication of its soundness. Success is by Allah.	बल्कि यूँ कहो कि हम मुसलमान हो गए हैं...'" (49:14)। अल्लाह तआला ने स्पष्ट कर दिया कि हर मुसलमान अनिवार्य रूप से मोमिन नहीं होता; इससे यह सिद्ध हुआ कि हर मुसलमान मोमिन नहीं है। जब सअद बिन अबी वक़्क़ास ने कहा: "फलाँ व्यक्ति को दो, वह मोमिन है," तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: "या (कहो) मुसलमान।" (मुस्लिम) इससे स्पष्ट होता है कि ईमान और इस्लाम एक ही चीज़ नहीं हैं। ईमान आंतरिक (बातिनी) है और इस्लाम बाहरी (ज़ाहिरी), और यह बात बिल्कुल स्पष्ट है। हाँ, कभी ईमान शब्द इस्लाम के अर्थ में और कभी इस्लाम शब्द ईमान के अर्थ में प्रयुक्त हो जाता है, क्योंकि दोनों का आपस में गहरा संबंध है। मानो इस्लाम, ईमान का फल है और उसके सही होने की पहचान है। सफलता केवल अल्लाह की तौफ़ीक़ से है।
Ibrāhīm directed his sons to this, as did Ya'qūb: 'My sons! Allah has chosen this dīn for you, so do not die except as Muslims.' [2:132]	**इब्राहीम ने अपने बेटों को इसी बात की वसीयत की, और याक़ूब ने भी यही किया: "ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए इसी दीन को चुन लिया है, इसलिए तुम्हारी मृत्यु**

	इसी अवस्था में हो कि तुम मुसलमान हो।" [2:132]
Ibrāhīm directed his sons to this, as did Ya'qūb:	**इब्राहीम◌ ने अपने बेटों को इसी बात की वसीयत की, और याक़ूब◌ ने भी यही किया।**
'This' may refer to 'the religion' or to the words, 'I submit to the Lord of the worlds.' The latter view is more correct because it was the last thing mentioned. Some readings have waṣṣā for 'directed' whereas the people of Madinah and Syria read awṣā.	शब्द "यह" से या तो "दीन" अभिप्रेत है या फिर यह कथन: "मैं रब्बुल-आलमीन का आज्ञाकारी हूँ।" दूसरा मत अधिक सही है, क्योंकि वही बात अंत में उल्लेखित हुई है। कुछ क़िराअतों में वस्सा (वसीयत की) पढ़ा गया है, जबकि मदीना और शाम के क़ारी औसा (वसीयत की) पढ़ते हैं।
Ismā'īl and Isḥāq were the sons of Ibrāhīm. The elder was Ismā'īl and his mother was Hajar the Copt. There are three positions regarding the age of Ismā'īl at the time Ibrāhīm took him to Makkah: as a baby, as a two year old infant or as a fourteen year old youth. The first is considered the soundest. He was born fourteen years before his brother Isḥāq and died when he was one hundred and thirty-seven or one hundred and thirty years old. He was eighty years old when Ibrāhīm	इस्माईल◌ और इस्हाक़◌, इब्राहीम◌ के बेटे थे। उनमें बड़े इस्माईल◌ थे, और उनकी माता हाजिरा◌ थीं, जो क़िब्तिया थीं। इस विषय में तीन मत हैं कि जब इब्राहीम◌ इस्माईल◌ को मक्का ले गए, उस समय उनकी आयु क्या थी: एक मत यह है कि वे दूधमुंहे शिशु थे, दूसरा यह कि वे दो वर्ष के छोटे बच्चे थे, और तीसरा यह कि वे चौदह वर्ष के युवक थे। पहला मत अधिक प्रामाणिक माना जाता है। इस्माईल◌ अपने भाई इस्हाक़◌ से चौदह वर्ष पहले पैदा हुए, और उनका निधन एक सौ सैंतीस या एक सौ तीस

died. According to one statement, he was the son Ibrāhīm was commanded to sacrifice. Isḥāq's mother was Sārah, and he was the sacrifice according to another statement, which seems sounder. We will deal with this when we examine the story in Sūrat aṣ-Ṣāffāt (37:102-109). From him descend the Romans, Greeks and Armenians and those like them and the sons of Israel. Isḥāq lived to the age of one hundred and eighty and died in the Holy Land. He was buried with his father Ibrāhīm. When Sārah died, Ibrāhīm married Qanṭūra (Keturah) bint Yaqtan the Canaanite and she bore him Madyan, Madayin, Nahshan, Zimrān, Nashīq and Shuyūkh. He died about 2600 years before the birth of the Prophet ﷺ. The Jews lessen this by 400 years.

वर्ष की आयु में हुआ। जब इब्राहीमؑ का निधन हुआ, उस समय इस्माईलؑ की आयु अस्सी वर्ष थी। एक मत के अनुसार वही वह पुत्र थे जिन्हें इब्राहीमؑ को क़ुर्बान करने का आदेश दिया गया था। इस्हाक़ؑ की माता सारहؑ थीं, और दूसरे मत के अनुसार—जो अधिक सुदृढ़ प्रतीत होता है—क़ुर्बानी के लिए चुने गए पुत्र इस्हाक़ؑ ही थे। इस विषय पर हम सूरह अस्-साफ़्फ़ात (37:102–109) के प्रसंग में चर्चा करेंगे। इस्हाक़ؑ की संतति से रोमनों, यूनानियों, आर्मेनियों और उनसे मिलती-जुलती अन्य जातियों के साथ-साथ बनी इस्राईल उत्पन्न हुए। इस्हाक़ؑ एक सौ अस्सी वर्ष की आयु तक जीवित रहे और पवित्र भूमि में उनका निधन हुआ, और उन्हें अपने पिता इब्राहीमؑ के साथ दफ़्न किया गया। सारहؑ के निधन के बाद इब्राहीमؑ ने क़ंतूरा (केतूरा) बिन्त यक़्तान कनआनी से विवाह किया, जिनसे उनके पुत्र मिद्यान, मदायिन, नहशान, ज़िमरान, नशीक़ और शुयूख़ पैदा हुए। इब्राहीमؑ का निधन नबी ﷺ की पैदाइश से लगभग 2600 वर्ष पूर्व हुआ। यहूदी इस अवधि को 400 वर्ष कम बताते हैं।

Ya'qub gave the same directive to his other sons. Al-Kalbi said, 'When Ya'qub looked at the people in Egypt, he saw them worshipping idols, fire and cows, so he collected his sons and alerted them, asking, "What will you worship after me?" He was called Ya'qub because he was the second of twins and was born holding onto the heel of his brother ('aqib). He lived to the age of one hundred and forty-seven and died in Egypt. He instructed that he should be transported to the Holy Land and buried with his father, Ishaq. Yusuf transported him and buried him there.	याक़ूब अलैहिस्सलाम ने यही हिदायत अपने दूसरे बेटों को भी दी। कलबी रहिमहुल्लाह ने कहा: जब याक़ूब अलैहिस्सलाम ने मिस्र के लोगों को देखा तो उन्हें बुतों, आग और गायों की इबादत करते हुए पाया, इसलिए उन्होंने अपने बेटों को इकट्ठा किया और उन्हें सचेत किया, और पूछा: "मेरे बाद तुम किसकी इबादत करोगे?" उनका नाम याक़ूब इसलिए रखा गया कि वे जुड़वाँ थे और दूसरे नंबर पर पैदा हुए थे, और जन्म के समय अपने भाई की एड़ी (अक़िब) को थामे हुए थे। वे एक सौ सैंतालीस वर्ष की आयु तक जीवित रहे और मिस्र में उनका निधन हुआ। उन्होंने वसीयत की कि उन्हें सरज़मीन-ए-मुक़द्दस की ओर ले जाया जाए और अपने पिता इस्हाक़ अलैहिस्सलाम के साथ दफ़न किया जाए। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने उन्हें वहाँ पहुँचाया और वहीं दफ़न किया।
'My sons! Allah has chosen this din for you, so do not die except as Muslims.'	**"ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए यही दीन चुना है, इसलिए तुम्हें मौत न आए मगर इस हालत में कि तुम मुसलमान हो।"**
The din is Islam. This means: 'Cling to Islam and persevere in it and do not part from it until	दीन इस्लाम है। इसका आशय यह है कि इस्लाम को मज़बूती से थामे रखो, उस पर डटे रहो, और मृत्यु आने तक

you die.' This contains an admonition and a reminder of death. That is because everyone knows that they will die but they do not know when. So the command is that death should not come upon you when you are not following the din. It is a constant, continuing command.	उससे अलग न हो। इसमें नसीहत भी है और मृत्यु की याद दिलाने वाला संदेश भी, क्योंकि हर व्यक्ति जानता है कि उसे मृत्यु आएगी, लेकिन यह नहीं जानता कि कब। इसलिए आदेश यह है कि मृत्यु उस अवस्था में न आए जब तुम दीन पर अमल न कर रहे हो। यह एक स्थायी और निरंतर आदेश है।
Or were you present when death came to Ya'qub and he said to his sons, 'What will you worship when I have gone?' They said, 'We will worship your God, the God of your forefathers, Ibrahim, Isma'il and Ishaq – one God. We are Muslims submitted to Him.' [2:133]	**क्या तुम उस समय मौजूद थे जब याक़ूब अलैहिस्सलाम के पास मृत्यु आई, और उन्होंने अपने बेटों से कहा: "मेरे बाद तुम किसकी इबादत करोगे?" उन्होंने कहा: "हम आपके माबूद की इबादत करेंगे, और आपके पूर्वजों इब्राहीम, इस्माईल और इस्हाक़ अलैहिमुस्सलाम के माबूद की—जो एक ही माबूद है। और हम उसी के आज्ञाकारी (मुसलमान) हैं।" [2:133]**
This is addressed to the Jews and Christians who, by following Judaism and Christianity, falsely attribute to Ibrahim something for which he gave no authority. Allah refuted their words and rebuked them here. He says that they are	यह ख़िताब यहूदियों और ईसाइयों से है, जो यहूदियत और ईसाइयत की पैरवी करते हुए हज़रत इब्राहीम◌́ की तरफ़ ऐसी बात मंसूब करते हैं जिसकी उन्होंने कोई इजाज़त नहीं दी। अल्लाह तआला ने यहाँ उनके क़ौल की तरदीद की और उन्हें मलामत की, और

forging lies. Isma‘il is included because the uncle is counted with the father.	फ़रमाया कि वे झूठ गढ़ रहे हैं। इस्माईल◌́ को इस लिए शामिल किया गया है कि अरबी उर्फ़ में चाचा को भी बाप के हुक्म में शुमार किया जाता है।
That was a community which has long since passed away. It has what it earned. You have what you have earned. You will not be questioned about what they did.[2:134]	**वह एक ऐसी जमाअत थी जो गुज़र चुकी। उसके लिए वही है जो उसने कमाया, और तुम्हारे लिए वही है जो तुमने कमाया। और तुमसे उनके आमाल के बारे में सवाल नहीं किया जाएगा। [2:134]**
This āyah indicates that a person’s actions and earnings, good or evil, are ascribed to him, even though it is Allah who gives him the power to do what he does. If it is good, it is by Allah’s favour. If it evil, it is by His justice. This is the school of the People of the Sunnah. There are many āyahs in the Qur’an which express this. A person earns his actions since the power connected to the action was created for him and there is a clear difference between a movement he makes by his own choice and, for instance, an involuntary movement such as a shiver. That capacity is the core	यह आयत इस बात की तरफ़ इशारा करती है कि इंसान के आमाल और कमाई—चाहे नेकी हो या बदी—उसी की तरफ़ मंसूब होती है, हालाँकि उसे अमल करने की क़ुदरत अल्लाह ही अता करता है। अगर अमल नेकी का हो तो वह अल्लाह के फ़ज़्ल से है, और अगर बुराई का हो तो वह उसके अद्ल की बुनियाद पर है। यही अहल-ए-सुन्नत-वल-जमाअत का मस्लक है। क़ुरआन में ऐसी बहुत-सी आयतें हैं जो इसी हक़ीक़त को बयान करती हैं। इंसान अपने आमाल का कासिब है, क्योंकि अमल के साथ वाबस्ता क़ुदरत उसके लिए पैदा की गई है, और उस हरकत में वाज़ेह फ़र्क़ है जो वह अपने इख़्तियार से करता है और उस हरकत में जो बे-इख़्तियार होती है,

of accountability. The Jabrites negate any possibility of personal responsibility and say that people are like plants which move whichever way the wind blows. The Qadarites and Mu'tazilites take the opposite position that a person creates his own actions. No one will be punished for the actions of another.	जैसे कपकपी। यही क़ुदरत (इख़्तियार) जवाबदेही की असल बुनियाद है। जब्रिया हर क़िस्म की ज़ाती ज़िम्मेदारी की नफ़ी करते हैं और कहते हैं कि इंसान पौधों की मानिंद हैं जो जिधर हवा चले उधर झुक जाते हैं। क़दरिया और मुतज़िला इसके बरअक्स मौक़िफ़ इख़्तियार करते हैं कि इंसान ख़ुद अपने आमाल को पैदा करता है। किसी शख़्स को दूसरे के आमाल की सज़ा नहीं दी जाएगी।
They say, 'Be Jews or Christians and you will be guided.' Say, 'Rather adopt the religion of Ibrāhīm, a man of natural pure belief. He was not one of the idolaters.' [2:135]	**वे कहते हैं: "यहूदी या ईसाई बन जाओ तो हिदायत पाओगे।" कह दो: "नहीं, बल्कि इब्राहीम के दीन की पैरवी करो—जो फ़ित्रत-ए-सलीम पर क़ायम था। और वह मुशरिकों में से न था।" [2:135]**
Each claims that what they have is the real truth but Allah refuted that. The āyah means: 'Say, O Muhammad, "We follow the one religion."' This is why the word "millah" (religion) is in the accusative case. It is said that it means: 'Follow the religion of Ibrāhīm.' It implies: 'Guidance is a religion,' or 'Our	हर एक यह दावा करता है कि जो कुछ उसके पास है वही असल हक़ है, लेकिन अल्लाह तआला ने इस दावे की तरदीद फ़रमा दी। इस आयत का मफ़हूम यह है: "ऐ मुहम्मद ﷺ! कह दीजिए कि हम एक ही दीन की पैरवी करते हैं।" इसी वजह से लफ़्ज़ मिल्लत (दीन) हालत-ए-नसब में आया है। यह भी कहा गया है कि इसका मतलब है:

religion is that of Ibrāhīm.' Az-Zajjāj said that. Ibrāhīm is called a hanīf because he inclined to the dīn of Allah, which is Islam. Hanf means 'inclination'. A man who is ahnaf (clubfooted) has his feet turn toward each other. Hanf means 'going straight' as well. Ibrāhīm is called a hanīf because he went straight.	"इब्राहीम के दीन की पैरवी करो।" इसमें यह मफ़हूम भी शामिल है कि "हिदायत ख़ुद एक दीन है" या "हमारा दीन इब्राहीम का दीन है।" यह बात अज़-ज़ज्जाज ने कही है। इब्राहीम को हनीफ़ इस लिए कहा गया कि वह अल्लाह के दीन, यानी इस्लाम, की तरफ़ माइल थे। हन्फ़ का मतलब है "मैलान"। जिस शख़्स को अहनफ़ (पाँव अंदर की तरफ़ मुड़े हुए) कहा जाता है, उसके पाँव एक-दूसरे की तरफ़ मुड़ जाते हैं। हन्फ़ के मानी "सीधा रास्ता इख़्तियार करना" भी हैं। इब्राहीम को हनीफ़ इस लिए कहा गया कि उन्होंने सीधा रास्ता इख़्तियार किया।
Say, 'We believe in Allah and what has been sent down to us and what was sent down to Ibrāhīm and Ismā'īl and Ishāq and Ya'qub and the Tribes, and what Mūsā and 'Īsā were given, and what all the Prophets were given by their Lord. We do not differentiate between any of them. We are Muslims submitted to Him.' [2:136]	**कह दो: "हम अल्लाह पर ईमान लाए, और उस पर जो हमारी तरफ़ नाज़िल किया गया, और उस पर जो इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक़, याक़ूब और औलाद-ए-याक़ूब की तरफ़ नाज़िल किया गया, और उस पर जो मूसा और ईसा को अता किया गया, और उस पर जो तमाम नबियों को उनके रब की तरफ़ से दिया गया। हम उनमें से किसी के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं करते,**

	और हम उसी के फ़रमाबरदार (मुस्लिम) हैं।" [2:136]
Al-Bukhārī transmitted that Abū Hurayrah said, 'The People of the Book used to recite the Torah in Hebrew and explain it in Arabic to the people of Islam. The Messenger of Allah ﷺ said, "Neither believe nor deny the People of the Book. Say, 'We believe in Allah and what has been revealed.'"' Muḥammad ibn Sīrīn said, 'When you are asked, "Are you a believer?" recite this āyah.' Many of the Salaf disliked anyone saying, 'I am truly a believer.' The reason for that will be explained in Sūrat al-Anfāl, Allah willing. One of the early people was asked about a man who was asked, 'Do you believe in the Prophet so-and-so?' and gave a name he did not know. If he said that he did, it is possible that it was not a Prophet and he was attesting to the Prophethood of someone who was not a Prophet. If he said that he did not, perhaps it was actually a	इमाम बुख़ारीؒ ने रिवायत किया है कि हज़रत अबू हुरैराؓ ने कहा: अहल-ए-किताब तौरात को इब्रानी ज़बान में पढ़ते थे और मुसलमानों के लिए उसकी अरबी में तशरीह करते थे। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "अहल-ए-किताब की न तसदीक़ करो और न तकज़ीब, बल्कि यह कहो: हम अल्लाह पर और उस पर ईमान लाए जो नाज़िल किया गया है।" मुहम्मद बिन सीरीनؒ ने कहा: जब तुमसे पूछा जाए, "क्या तुम मोमिन हो?" तो इस आयत की तिलावत कर दिया करो। सलफ़ में से बहुत-से लोगों को यह कहना नापसंद था कि "मैं यक़ीनन मोमिन हूँ।" इसकी वजह, इंशा-अल्लाह, सूरह-ए-अनफ़ाल में बयान की जाएगी। इब्तिदाई दौर के लोगों में से एक से ऐसे शख़्स के बारे में सवाल किया गया जिससे पूछा गया: "क्या तुम फ़लाँ नबी पर ईमान रखते हो?" और उसने ऐसे शख़्स का नाम लिया जिसे वह नहीं जानता था। अगर वह कह देता कि मैं ईमान रखता हूँ, तो मुमकिन था कि वह नबी न हो और यूँ वह किसी ग़ैर-नबी की नुबूवत की

Prophet and he was denying one of the Prophets. So what should he do? The reply was that he should say, 'If he is a Prophet, I believe in him.' This āyah is addressed to this community to instruct them in faith. Ibn 'Abbās said, 'A group of Jews came to the Prophet ﷺ and asked him about which of the Prophets he believed in and this āyah was revealed. When he mentioned 'Īsā, they said, "We do not believe in 'Īsā or in anyone who does believe in him."	तसदीक़ कर बैठता। और अगर वह कह देता कि मैं ईमान नहीं रखता, तो मुमकिन था कि वह वाक़ई नबी हो और यूँ वह किसी नबी का इनकार कर बैठता। तो उसे क्या करना चाहिए? जवाब यह दिया गया कि वह कहे: "अगर वह नबी हैं तो मैं उन पर ईमान रखता हूँ।" यह आयत इस उम्मत को ईमान का तरीक़ा सिखाने के लिए नाज़िल की गई है। इब्न अब्बास ने फ़रमाया: यहूदियों का एक गिरोह नबी ﷺ के पास आया और आप से पूछा कि आप किन-किन नबियों पर ईमान रखते हैं, तो यह आयत नाज़िल हुई। जब आप ﷺ ने हज़रत ईसा का ज़िक्र फ़रमाया तो उन्होंने कहा: "हम न ईसा पर ईमान रखते हैं और न उस पर जो उन पर ईमान रखता हो।"
and the Tribes,	**और अस्बात**
Asbāṭ (the Tribes) are from the twelve sons of Ya'qub. A nation sprang from each of them. They are called asbāṭ, which comes from sabṭ, which means succession, and so it was as if they followed one another. Sabṭ is the term used for the tribes descending from Ya'qub as qabīlah is used for Arab tribes.	अस्बात (क़बाइल) याक़ूब के बारह बेटों से ताल्लुक़ रखते हैं। उनमें से हर एक से एक उम्मत वुजूद में आई। उन्हें अस्बात कहा जाता है, जो सिब्त से माख़ूज़ है, जिसके मानी हैं पै-दर-पै आना, गोया वे एक-दूसरे के बाद आए। सिब्त का लफ़्ज़ याक़ूब की नस्ल से निकलने वाले क़बाइल के लिए इस्तेमाल होता है, जैसे अरब क़बाइल

It is also said that the word is derived from sabat, which means a tree. The singular is sabatah. Abū Isḥāq az-Zajjāj said that this is clear in what Muḥammad ibn Ja'far al-Anbārī related from Abū Nujayd ad-Daqqāq from al-Aswad ibn 'Āmir from Isrā'īl from Simāk from 'Ikrimah that Ibn 'Abbās said, 'All the Prophets were from the tribe of Israel except for ten: Nūḥ, Shu'ayb, Hūd, Ṣāliḥ, Lūṭ, Ibrāhīm, Isḥāq, Ya'qub, Ismā'īl and Muḥammad ﷺ. None of them had two names except for 'Īsā and Ya'qub.' Sibt denotes a group or tribe who come from a single ancestor.	के लिए क़बीला का लफ़्ज़ बोला जाता है। यह भी कहा गया है कि यह लफ़्ज़ सबत से निकला है, जिसके मानी दरख़्त के हैं, और उसकी वाहिद सबतह है। अबू इस्हाक़ अज़-ज़ज्जाज ने कहा कि इसकी वज़ाहत उस रिवायत से होती है जो मुहम्मद बिन जाफ़र अल-अनबारी ने अबू नुजैद अद-दक़्क़ाक़ से, उन्होंने अल-असवद बिन आमिर से, उन्होंने इसराईल से, उन्होंने सिमाक से, और उन्होंने इकरिमा से नक़्ल की है कि इब्न अब्बास ने फ़रमाया: "तमाम अंबिया बनी इसराईल ही में से थे, सिवाय दस के: नूह, शुऐब, हूद, सालेह, लूत, इब्राहीम, इस्हाक़, याक़ूब, इस्माईल और मुहम्मद ﷺ। उनमें से किसी के दो नाम नहीं थे, सिवाय ईसा और याक़ूब के।" सिब्त ऐसे गिरोह या क़बीले को कहते हैं जो एक ही जद्दे-अमजद से निकले हों।
We do not differentiate between any of them,	**हम उनमें से किसी के दरमियान कोई इम्तियाज़ नहीं करते।**
This means 'We do not believe in some and reject others like the Jews and Christians do.'	इसका मतलब यह है: "हम कुछ पर ईमान लाते हैं और कुछ का इनकार नहीं करते, जैसा कि यहूद व नसारा करते हैं।"

If their faith is the same as yours then they are guided. But if they turn away, they are entrenched in hostility. Allah will be enough for you against them. He is the All-Hearing, the All-Knowing. [2:137]	**अगर वे उसी तरह ईमान लाएँ जैसे तुम ईमान लाए हो तो वे हिदायत पर हैं। लेकिन अगर वे मुँह मोड़ लें तो वे खुली मुख़ालफ़त में मुब्तला हैं। अल्लाह तुम्हारी तरफ़ से उनके मुक़ाबले के लिए काफ़ी है, और वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। [2:137]**
If their faith is the same as yours then they are guided.	**अगर उनका ईमान तुम्हारे ईमान जैसा हो तो वे हिदायत पर हैं।**
This is addressed to Muḥammad ﷺ and his community. It means that if they believe as you believe and affirm what you affirm, they are guided. So similarity can occur between two faiths. Baqiyyah related from Shu'bah from Abū Ḥamzah that Ibn 'Abbās said, 'Do not say, "If they believe in the like of what you believe." Allah has no like. Rather say, "in that in which you believe."' 'Alī ibn Naṣr al-Jahḍamī corroborate it from Shu'bah.Al-Bayhaqī mentioned it. It is also said to mean that if they believe in your Prophet and all the Prophets without differentiating	यह ख़िताब रसूल-ए-अकरम ﷺ और आप की उम्मत से है। इसका मतलब यह है कि अगर वे उसी तरह ईमान लाएँ जैसे तुम ईमान लाए हो, और जिन बातों की तुम तसदीक़ करते हो उनकी तसदीक़ करें, तो वे हिदायत पर हैं। इससे मालूम होता है कि दो ईमानों के दरमियान मुशाबहत वाक़े हो सकती है। बक़िय्या ने शुअ्बा से, उन्होंने अबू हमज़ा से रिवायत किया कि इब्न अब्बास ने फ़रमाया: "यह न कहो कि 'अगर वे उस जैसी चीज़ पर ईमान लाएँ जिस पर तुम ईमान लाए हो', क्योंकि अल्लाह की कोई मिस्ल नहीं है। बल्कि यह कहो: 'उस पर ईमान लाएँ जिस पर तुम ईमान लाए हो।'" अली बिन नस्र अल-जुहज़मी ने भी शुअ्बा के वासिते से इसकी ताईद की

between them, then they are guided.	है। इमाम बैहक़ी ने भी इस रिवायत का ज़िक्र किया है। यह मआनी भी बयान किया गया है कि अगर वे तुम्हारे नबी ﷺ पर और तमाम अंबिया पर, बिना किसी इम्तियाज़ के, ईमान लाएँ तो वे हिदायतयाफ़्ता हैं।
But if they turn away, they are entrenched in hostility.	**लेकिन अगर वे मुँह मोड़ लें तो वे खुली अदावत में जमे हुए हैं।**
If they refuse to do anything except differentiate between them, then they veer from the dīn to hostility. Zayd ibn Aslam said that the expression 'entrenched in hostility' (*fi shiqāq*) means 'in contention'. It is said to be quarrelling, opposition and hostility. It is derived from *shaqq*, which is the side of a chasm, so it is as if each was one of two sides. It is said that it is derived from a verb meaning to be difficult and hard and so it is as if it means that each side wants to make things difficult for the other side.	अगर वे अंबिया के दरमियान फ़र्क़ करने के सिवा किसी बात पर आमादा न हों, तो वे दीन से हटकर अदावत और मुख़ालफ़त की राह पर पड़ जाते हैं। ज़ैद बिन असलम ने कहा है कि इबारत फ़ी शिक़ाक़ का मतलब है "झगड़े और कशमकश में होना।" इससे मुराद बाहमी निज़ा', मुख़ालफ़त और दुश्मनी है। यह लफ़्ज़ शक़्क़ से माख़ूज़ है, जिसके मानी घाटी या दरार के एक किनारे के हैं, गोया हर फ़रीक़ अलग-अलग किनारे पर खड़ा है। यह भी कहा गया है कि यह ऐसे फ़े'ल से निकला है जिसके मानी सख़्ती और दुश्वारी के हैं, गोया इसका मफ़हूम यह है कि हर फ़रीक़ दूसरे के लिए मामला मुश्किल और सख़्त बनाना चाहता है।
Allah will be enough for you against them.	**अल्लाह तुम्हारे लिए उनके मुक़ाबले में काफ़ी है।**

Allah will protect His Messenger against his enemies. This is a promise from Allah to His Prophet ﷺ that He would protect him from those who were hostile to him and opposed him. He carried out that promise. That was when the Banū Qaynuqā‘ and the Banū Qurayzah were killed and Banū ’n-Naḍīr were expelled. It was this āyah on which ‘Uthman’s blood spilled when he was murdered as the Prophet ﷺ had foretold about him. It is related that Abū Dulāmah visited al-Manṣūr wearing a tall hat, a cloak on the back of which was written: ‘Allah will be enough for you against them. He is the All-Hearing, the All-Knowing’, and a sword girded around his waist. Al-Manṣūr had commanded the army to dress in that garb. He asked him, ‘How are you, Abū Dulāmah?’ ‘Bad, Amīr al-Mu’minīn,’ he answered. ‘Why is that?’ he inquired. He said, ‘What would you think of man whose face is on his waist, whose sword in on

अल्लाह तआला अपने रसूल ﷺ को उनके दुश्मनों के मुक़ाबले में महफ़ूज़ रखेगा। यह अल्लाह की तरफ़ से अपने नबी ﷺ के लिए एक वादा है कि वह आप को उन लोगों से बचाएगा जो आप से दुश्मनी रखते थे और आपकी मुख़ालफ़त करते थे, और अल्लाह ने इस वादे को पूरा करके दिखाया। यही वह मौक़ा था जब बनू क़ैनुक़ा‘ और बनू क़ुरैज़ा क़त्ल किए गए और बनू नज़ीर को जिलावतन किया गया। यही वह आयत है जिस पर हज़रत उस्मानؓ के क़त्ल के वक़्त उनका ख़ून बहा, जैसा कि नबी ﷺ ने उनके बारे में पहले ही ख़बर दे दी थी। रिवायत है कि अबू दुलामा मंसूर के पास आए, इस हाल में कि उन्होंने एक ऊँची टोपी पहन रखी थी, एक चोग़ा ओढ़ा हुआ था जिसकी पीठ पर लिखा था: "अल्लाह तुम्हारे लिए उनके मुक़ाबले में काफ़ी है, और वह ख़ूब सुनने वाला, ख़ूब जानने वाला है", और कमर में तलवार बँधी हुई थी। मंसूर ने फ़ौज को इसी तरह का लिबास पहनने का हुक्म दे रखा था। मंसूर ने उनसे पूछा: "अबू दुलामा! तुम कैसे हो?" उन्होंने जवाब दिया: "अमीरुल-मोमिनीन! मेरा हाल बुरा है।" उसने पूछा: "वह कैसे?" उन्होंने कहा: "आप उस आदमी के

his bottom, and he has thrown the Book of Allah behind his back?' Al-Manṣūr laughed at him and immediately ordered that the manner of dress be changed.	बारे में क्या कहेंगे जिसका चेहरा उसकी कमर पर हो, तलवार उसकी पीठ के नीचे हो, और उसने अल्लाह की किताब को अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया हो?" मंसूर इस बात पर हँस पड़ा और फ़ौरन लिबास का तरीक़ा बदल देने का हुक्म दे दिया।
The dye of Allah – and what dye could be better than Allah's? It is Him we worship. [2:138]	**अल्लाह का रंग इख़्तियार करो— और अल्लाह के रंग से बेहतर किसका रंग हो सकता है? और हम उसी की इबादत करने वाले हैं। [2:138]**
Al-Akhfash and others said that 'the dye of Allah' is the dīn of Allah and is an appositive for *millah*, and so it implies: 'Follow it'. Shaybah related that Qatādah said, 'The Jews used to baptise their sons as Jews and the Christians baptised their sons as Christians. The baptism of Allah is Islam.' Mujāhid said that it is the natural form on which people are created. Az-Zajjāj says, 'This statement of Mujāhid refers to Islam because the natural form ever since the beginning of creation has been Islam.' Mujāhid, al-Ḥasan,	अख़फ़श और दूसरे अहल-ए-इल्म ने कहा है कि "सिब्ग़तुल्लाह" से मुराद अल्लाह का दीन है, और यह लफ़्ज़ मिल्लत का बदल (बदल-ए-कुल) है, लिहाज़ा इसका मफ़्हूम यह बनता है: "उसी की पैरवी करो।" शैबह ने रिवायत किया कि क़तादह ने कहा: यहूदी अपने बच्चों को यहूदी बनाने के लिए बपतिस्मा देते थे और ईसाई अपने बच्चों को ईसाई बनाने के लिए बपतिस्मा देते थे, जबकि अल्लाह का बपतिस्मा इस्लाम है। मुजाहिद ने कहा कि इससे मुराद वह फ़ित्रत है जिस पर इंसान पैदा किए गए हैं। अज़-ज़ज्जाज कहते हैं कि मुजाहिद का यह क़ौल दरअसल

Abu-l-ʻĀliyah and Qatādah said that the ‘dye’ is the dīn. This also derives from immersion in water. Ibn ‘Abbās said that Christians baptised their children when they were seven days old to replace circumcision, which is purification. When they do this, they say, ‘Now he is truly a Christian.’ Allah refuted them by saying that the dye of Islam is better. It is Islam. Calling the dīn this is a metaphor since the effect of it in actions can be seen in a person in the same way that dye can be seen in a garment. It is said that it refers to the *ghusl* taken by someone who wants to become Muslim which replaces Christian baptism. Al-Māwardī said that.

इस्लाम ही की तरफ़ इशारा है, क्योंकि तख़्लीक़ के आग़ाज़ से फ़ित्रत इस्लाम ही रही है। मुजाहिदؒ, हसन बसरीؒ, अबुल-आलियहؒ और क़तादहؒ—सब ने कहा कि यहाँ “रंग” से मुराद दीन है। इस ताबीर की असल पानी में डुबकी लगाने (ग़ोता देने) से भी ली गई है। इब्न अब्बासؓ ने फ़रमाया कि ईसाई अपने बच्चों को सात दिन की उम्र में बपतिस्मा देते थे ताकि ख़तना—जो कि तहारत है—का बदल बन जाए, और वे कहते थे: “अब यह बच्चा वाक़ई ईसाई हो गया।” अल्लाह तआला ने इसकी तरदीद करते हुए फ़रमाया कि इस्लाम का रंग इससे बेहतर है—और वही इस्लाम है। दीन को “रंग” कहना एक इस्तिआरा है, क्योंकि जैसे कपड़े पर रंग ज़ाहिर हो जाता है, उसी तरह दीन के असरात इंसान के आमाल में ज़ाहिर हो जाते हैं। यह भी कहा गया है कि इससे मुराद वह ग़ुस्ल है जो कोई शख़्स इस्लाम क़ुबूल करते वक़्त करता है, जो ईसाई बपतिस्मा का क़ायम-मक़ाम है। यह क़ौल इमाम मावर्दीؒ का है।

Because one meaning of ‘dye of Allah’ is the ‘washing (*ghusl*) of Allah’ it is said that washing when you become Muslim is an

चूँकि “सिब्ग़तुल्लाह” के एक मानी “अल्लाह का ग़ुस्ल” भी हैं, इसलिए कहा गया है कि इस्लाम क़ुबूल करते

obligatory practice. The evidence for this in the Sunnah comes from Qays ibn ʻĀsim and Thumāmah ibn Athāl who both had a *ghusl* when they became Muslims. Abū Ḥātim al-Bustī said in a sound transmission that Abū Hurayrah said that Thumāmah al-Ḥanafī was captured and one day the Prophet ﷺ passed by him and he became Muslim. He sent him to the garden of Abū Ṭalḥah and told him to have a *ghusl*. He did so and prayed two *rakʻahs*. The Prophet ﷺ said, 'The Islam of your companion is good.' It is also transmitted that Qays ibn ʻĀsim became Muslim and the Prophet ﷺ told him to have a *ghusl* with water and lote-leaves. An-Nasā'ī mentioned it and Abū Muḥammad ʻAbd al-Ḥaqq said that it is sound. It is said that an act by which one draws near to Allah is called 'dye'. Ibn Fāris related that in *al-Mujmal*. Al-Jawharī said that 'the dye of Allah' is His dīn. It

वक़्त ग़ुस्ल करना एक वाजिब अमल है। सुन्नत में इसकी दलील हज़रत क़ैस बिन आसिमؓ और सुमामा बिन असालؓ के वाक़िआत से मिलती है, क्योंकि दोनों ने इस्लाम क़ुबूल करते वक़्त ग़ुस्ल किया था। अबू हातिम बुस्तीؒ ने एक सहीह रिवायत में नक़्ल किया है कि हज़रत अबू हुरैराؓ ने बयान किया: सुमामा अल-हनफ़ी गिरफ़्तार किए गए थे। एक दिन नबी ﷺ उनके पास से गुज़रे तो वे मुसलमान हो गए। आप ﷺ ने उन्हें अबू तल्हाؓ के बाग़ की तरफ़ भेजा और उन्हें ग़ुस्ल करने का हुक्म दिया। उन्होंने ग़ुस्ल किया और दो रकअत नमाज़ अदा की। इस पर नबी ﷺ ने फ़रमाया: "तुम्हारे साथी का इस्लाम अच्छा है।" इसी तरह यह भी मन्क़ूल है कि हज़रत क़ैस बिन आसिमؓ इस्लाम लाए तो नबी ﷺ ने उन्हें पानी और बेर के पत्तों के साथ ग़ुस्ल करने का हुक्म दिया। इस रिवायत को इमाम नसाईؒ ने ज़िक्र किया है, और अबू मुहम्मद अब्दुल-हक़्क़ؒ ने इसे सहीह क़रार दिया है। यह भी कहा गया है कि जिस अमल के ज़रिए अल्लाह का क़ुर्ब हासिल किया जाए, उसे "सिब्ग़ा" कहा जाता है। इब्न फ़ारिसؒ ने *अल-मुजमल* में यही बात नक़्ल की है। जौहरीؒ ने

is also said that it is circumcision.	कहा कि "सिब्ग़तुल्लाह" से मुराद अल्लाह का दीन है। यह क़ौल भी मन्क़ूल है कि इससे मुराद ख़तना है।
Say, 'Do you argue with us about Allah when He is our Lord and your Lord? We have our actions and you have your actions. We act for Him alone.' [2:139]	**कह दो: "क्या तुम अल्लाह के बारे में हमसे झगड़ते हो, हालाँकि वही हमारा रब भी है और तुम्हारा रब भी? हमारे आमाल हमारे लिए हैं और तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिए हैं, और हम उसी के लिए अपनी बंदगी को ख़ालिस रखते हैं।" [2:139]**
Al-Hasan said, 'Their argument is that they say, "We are more entitled to Allah than you because we are the sons of Allah and those He loves."' (cf. 5:18) It is said that it was because of 'our ancestors and books and because we did not worship idols.' So the meaning of the āyah is: 'Ask them, Muhammad,' – meaning those Jews and Christians who claim that they are the sons of Allah and those He loves and claim that they are more entitled to Allah than you because of their ancestors and Books – 'Where is your argument when the Lord is One and everyone will be	हसन बसरी ने कहा: उनका झगड़ा यह था कि वे कहते थे: "हम तुमसे ज़्यादा अल्लाह के हक़दार हैं, इसलिए कि हम अल्लाह के बेटे हैं और उसके महबूब हैं।" (देखिए: 5:18) यह भी कहा गया है कि उनका दावा इस बुनियाद पर था कि "हमारे आबा-ओ-अजदाद हैं, हमारी किताबें हैं, और हमने बुतों की इबादत नहीं की।" पस आयत का मफ़हूम यह है: "ऐ मुहम्मद ﷺ! उनसे पूछो"—यानी उन यहूदियों और ईसाइयों से जो यह दावा करते हैं कि वे अल्लाह के बेटे और उसके महबूब हैं, और यह गुमान रखते हैं कि अपने आबा-ओ-अजदाद और किताबों की बुनियाद पर वे तुमसे ज़्यादा अल्लाह के क़रीब हैं—"तुम्हारी दलील कहाँ है, जबकि रब एक ही है

repaid for his actions? What advantage will precedence in the dīn give you?' 'About Allah' means 'about His dīn'.	और हर शख़्स को उसके अपने आमाल का बदला दिया जाएगा? दीन में सबक़त तुम्हें क्या फ़ायदा देगी?" और आयत में 'अल्लाह के बारे में' से मुराद 'अल्लाह के दीन के बारे में' है।
We act for Him alone.'	**और हम उसी के लिए अमल करते हैं।**
This means: 'We are sincere in our worship.' This contains a sense of rebuke, implying, 'You are not sincere so how can you claim that you are more entitled?' The reality of sincerity (*ikhlāṣ*) is to purify the action in question from taking any account of creatures. The Prophet ﷺ said, 'Allah Almighty says, "I am the best associate. Anyone who associates a partner with Me, belongs to his associates. O people, make your actions sincere for Allah Almighty. Allah Almighty does not accept other than what is done sincerely for Him alone. Do not say, "This is for Allah and my relatives." If it is for your relatives, none of it is for Allah.	इसका मतलब यह है: "हम अपनी इबादत में मुख़लिस हैं।" इसमें सरज़निश का पहलू भी है, यानी गोया यह कहा जा रहा हो: "तुम मुख़लिस नहीं हो, फिर यह दावा कैसे कर सकते हो कि तुम ज़्यादा हक़दार हो?" इख़लास (इख़लास-ए-नियत) की हक़ीक़त यह है कि अमल को मख़लूक़ की किसी भी मुराअत से पाक कर दिया जाए। नबी ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला फ़रमाता है: मैं सबसे बेहतर शरीक हूँ। जो शख़्स मेरे साथ किसी को शरीक ठहराता है, वह अपने शरीक ही के लिए है। ऐ लोगो! अपने आमाल अल्लाह तआला के लिए ख़ालिस कर लो, क्योंकि अल्लाह तआला उसी अमल को क़बूल करता है जो ख़ालिस उसी के लिए किया जाए। यह न कहो: 'यह अल्लाह के लिए है और मेरे रिश्तेदारों के लिए भी।' अगर वह

Do not say, “This is for Allah and your sakes.” Then it is for your sakes and none of it is for Allah.’ Ad-Ḍaḥḥāk ibn Qays al-Fihrī related it and ad-Dāraquṭnī transmitted it.	रिश्तेदारों के लिए है तो अल्लाह के लिए उसमें कुछ नहीं। और यह न कहो: ‘यह अल्लाह के लिए है और तुम्हारी ख़ातिर भी।’ फिर वह तुम्हारी ख़ातिर ही है और अल्लाह के लिए उसमें कुछ नहीं।” इस रिवायत को ज़हहाक़ बिन क़ैस अल-फ़िहरीؓ ने नक़्ल किया है और इमाम दारक़ुतनीؒ ने इसे रिवायत किया है।
Ruwaym said, ‘Sincerity in action is that the person who does something does not want any recompense or return for it in either this world or the Next.’ Al-Junayd said, ‘Sincerity is a secret between Allah and the slave. An angel cannot know it so as to record it, nor can a *shayṭān* corrupt it, nor can passion incline to it.’ Al-Qushayrī reported that the Prophet ﷺ said, ‘I asked Jibrīl about sincerity and what it was. He replied, “I asked the Lord of Might about what sincerity was and He said, ‘A secret of Mine which I entrust in the heart of those I love among My slaves.”’	रुवैमؒ ने कहा: “अमल में इख़लास यह है कि आदमी जो कुछ करे उस पर न दुनिया में किसी बदले का ख़्वाहिशमंद हो और न आख़िरत में किसी एवज़ का तालिब हो।” जुनैदؒ ने कहा: “इख़लास अल्लाह और बंदे के दरमियान एक राज़ है। न कोई फ़रिश्ता उसे जान सकता है कि उसे लिख ले, न कोई शैतान उसे ख़राब कर सकता है, और न ही नफ़्स की ख़्वाहिश उसकी तरफ़ माइल हो सकती है।” क़ुशैरीؒ ने नक़्ल किया है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: “मैंने जिब्रीलؑ से इख़लास के बारे में पूछा कि वह क्या है? उन्होंने कहा: मैंने रब्ब-ए-इज़्ज़त से इख़लास के बारे में पूछा तो उसने फ़रमाया: ‘यह मेरा एक राज़ है जिसे मैं अपने बंदों में से जिनसे

	मुहब्बत करता हूँ, उनके दिल में अमानत के तौर पर रख देता हूँ।'"
Or do they say that Ibrāhīm and Ismā'īl and Isḥāq and Ya'qūb and the Tribes were Jews or Christians? Say, 'Do you know better or does Allah? Who could do greater wrong than someone who hides the evidence he has been given by Allah? Allah is not unaware of what you do. [2:140]	**या वे यह कहते हैं कि इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक़, याक़ूब और अस्बात यहूदी थे या ईसाई? कह दो: "तुम ज़्यादा जानते हो या अल्लाह? और उस शख़्स से बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की दी हुई गवाही को छिपाए? और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बेख़बर नहीं है।" [2:140]**
Or do they say that Ibrāhīm and Ismā'īl and Isḥāq and Ya'qūb and the Tribes were Jews or Christians?	**या वे यह कहते हैं कि इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक़, याक़ूब और अस्बात यहूदी थे या ईसाई?**
Ḥamzah, al-Kisā'ī and 'Āṣim in the transmission of Ḥafṣ has 'Do you say?' with *ta'* which is a good reading. It is as if it means: 'Do you argue about Allah or say that the Prophets were following your dīn?' The other reading is with *ya'*, 'do they say'. This is, in either case, a rebuke to the claims of both the Jews and the Christians.	हमज़ा, किसाई और आसिम (रिवायत-ए-हफ़्स में) ने ता के साथ क़िराअत की है: "अतقول◌ून" (क्या तुम कहते हो?) और यह एक अच्छी क़िराअत है। गोया इसका मफ़हूम यह है: "क्या तुम अल्लाह के बारे में झगड़ते हो या यह कहते हो कि अंबिया तुम्हारे दीन की पैरवी करते थे?" दूसरी क़िराअत या के साथ है: "यक़ूलून" (क्या वे कहते हैं?)। दोनों सूरतों में यह यहूदियों और ईसाइयों के दावों पर सरज़निश है। अल्लाह

Allah refutes them because He knows better than you.	तआला ने उनकी तरदीद की है, क्योंकि अल्लाह तुमसे बेहतर जानता है।
Who could do greater wrong than someone who hides the evidence he has been given by Allah?	**उस शख़्स से बढ़कर ज़ालिम कौन हो सकता है जो अल्लाह की तरफ़ से दी गई गवाही को छिपाए?**
No one does greater wrong. The word 'evidence' (*shahāda*) here refers to the actions they have been commanded to do since the dīn of all the Prophets was Islam. It is also said to refer to their concealment of the description of Muḥammad ﷺ in their Revealed Books as Qatādah said, but the first explanation is more in keeping with the context.	कोई उससे बढ़कर ज़ालिम नहीं। यहाँ "गवाही" (शहादत) से मुराद वे आमाल हैं जिनका उन्हें हुक्म दिया गया था, क्योंकि तमाम अंबिया का दीन इस्लाम ही था। यह भी कहा गया है कि इससे मुराद उनकी तरफ़ से अपनी नाज़िल की गई किताबों में रसूल-ए-अकरम ﷺ की सिफ़ात को छिपाना है, जैसा कि क़तादा ने कहा है; लेकिन पहला मफ़हूम सियाक़-ओ-सबाक़ के ज़्यादा मुताबिक़ है।
Allah is not unaware of what you do.	**अल्लाह तुम्हारे आमाल से बेख़बर नहीं है।**
This is a threat that they will not be spared and will have to pay for what they did. A heedless or unaware person (ghāfil) is someone who does not grasp things because he ignores them. It is derived from earth which is ghufl, which means there is no	यह एक तंबीह और वईद है कि उन्हें छोड़ा नहीं जाएगा, बल्कि जो कुछ उन्होंने किया है उसका बदला उन्हें दिया जाएगा। ग़ाफ़िल वह शख़्स होता है जो चीज़ों को इसलिए नहीं समझ पाता कि वह उनसे ग़फ़लत बरतता है। यह लफ़्ज़ ग़ुफ़्ल से माख़ूज़ है, जो

sign or trace of habitation on it. A camel which is ghufl has no markings. A man who is ghufl has no experience of matters.	उस ज़मीन के लिए बोला जाता है जिस पर आबादी की कोई निशानी या असर न हो। वह ऊँट जो ग़ुफ़्ल हो, उस पर कोई निशान नहीं होता। और वह आदमी जो ग़ुफ़्ल हो, मामलों का कोई तजुर्बा नहीं रखता।
That was a community which has long since passed away. It has what it earned. You have what you have earned. You will not be questioned about what they did. [2:141]	**वह एक ऐसी जमाअत थी जो गुज़र चुकी। उसके लिए वही है जो उसने कमाया, और तुम्हारे लिए वही है जो तुमने कमाया। और तुमसे उनके आमाल के बारे में सवाल नहीं किया जाएगा। [2:141]**
This is repeated (cf. 2:134 above) because it contains a threat. Since the Prophets, in spite of their excellence and imamate, will be repaid for their actions, how much more will that be the case with you!	यह बात दोबारा कही गई है (जैसा कि ऊपर 2:134 में) क्योंकि इसमें वईद पाई जाती है। जब अंबिया—अपनी फ़ज़ीलत और पेशवाई के बावजूद—अपने आमाल का बदला पाएँगे, तो तुम्हारे साथ यह मामला बदर्ज़ा-ए-औला क्यों न होगा!